[Upadhyay et. al., Vol.5 (Iss.2): February, 2017] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21 IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षण–एक समीक्षात्मक विश्लेषण

द्विजेश उपाध्याय[1], डॉ0 निर्मला जोशी[2]
[*1] द्विजेश उपाध्याय, शोध छात्र-संगीत, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तरप्रदेश।
[2] डॉ0 निमर्ला जोशी, सहायक प्राध्यापक, एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.345672

सारांश

किसी भी ललित कला का संबंध मानव के दैहिक, दैविक और भौतिक जगत के उत्कर्ष को व्यक्त करता है। सभ्यता ज्यों-ज्यों अधिकाधिक सभ्य एवं सुसंस्कृत होती जाती है त्यों–त्यों ललित कलाओं का विकास अपने चरम पर पहुंचता जाता है। संगीत, ललित कला का एक प्रमुख अंग है। भारतीय सभ्यता में संगीत का स्थान ललित कला में सर्वोपरि है। महान भारतीय सभ्यता अपने उत्कर्ष काल से ही संगीत की शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती आई है। प्राचीन, वैदिक एवं मध्यकाल से आधुनिक काल तक भारतीय शिक्षण प्रणाली संगीत (उसके सभी अंगों यथा गायन, वादन एवं नृत्य) की शिक्षा पर अपना ध्यान केन्द्रित करती रही है। वर्तमान युग में शिक्षण प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन को परिलक्षित किया जा सकता है। शिक्षण प्रणाली में पारम्परिक एवं दूरस्थ शिक्षा जैसे विभाजनों को भी परिलक्षित किया जा सकता है। आज दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की लचीली तथा वैकल्पिक व्यवस्था के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। कहना न होगा कि दूरस्थ शिक्षण माध्यम से संगीत की पारम्परिक शिक्षा, गुरू–शिष्य संबंधों, संगीत की आंतरिक शिक्षण पद्धति तथा जीवन में संगीत(उसके सभी अंगों) के महत्व में आए बदलावों को अनुभव किया जा सकता है। वर्तमान युग में जहां एक ओर सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है वहीं सभी विषयों की शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन को लक्षित किया जा सकता है। दूरस्थ माध्यम से संगीत शिक्षा में विकसित कई नए आयामों का महत्व समझा जा सकता है। तकनीकी के अत्याधुनिक माध्यमों – जैसे ऑडियो–विडियो माध्यम, इंटरनेट, संचार के अत्याधुनिक उपकरण, टेलीविजन एवं रेडियो आदि का उपयोग दूरस्थ माध्यम द्वारा संगीत शिक्षण में सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लाभ, इससे उत्पन्न समस्याओं एवं उनके निराकरण का मार्ग खोजना है।

मुख्य शब्द: *दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, गुरू-शिष्य प्रणाली, संस्थागत शिक्षण प्रणाली, भारतीय शास्त्रीय संगीत, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वअध्ययन सामग्री, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम।*

Cite This Article: द्विजेश उपाध्याय, डॉ0 निर्मला जोशी. (2017). “उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षण–एक समीक्षात्मक विश्लेषण.” *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(2), 225-232. https://doi.org/10.5281/zenodo.345672.

1. भूमिका

शिक्षा जीवनपर्यन्त ज्ञानार्जन की गतिशील प्रक्रिया है। मानव विभिन्न माध्यमों व विभिन्न रूपों में निरन्तर ज्ञानर्जन करता रहता है। ज्ञानार्जन के माध्यम, समय, देशकाल एवं विभिन्न परिस्थितियों के कारण परिवर्तित हो सकते हैं किन्तु ज्ञानार्जन की प्रक्रिया निरन्तर गतिमान रहती है। भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से ही शिक्षा (मुख्यतः उच्च शिक्षा) एक वर्ग विशेष(उच्च वर्ग) की धरोहर मानी जाती रही है। पहले गुरूकुल तत्पश्चात विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में परम्परागत शिक्षण प्रणाली के आधार पर शिक्षण होता आया है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के आधार पर हमने जाना कि परम्परागत उच्च शिक्षा प्रणाली की अनेक सीमाओं जैसे समय, स्थान, आयु, वर्ग, जाति, योग्यता, धर्म आदि के कारण समाज के अधिकांश वर्ग उच्च शिक्षा से वंचित रहे हैं। परम्परागत उच्च शिक्षा प्रणाली की इन सीमाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षाविदों ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा से वंचित व्यक्तियों तक शिक्षा पहुँचाने पर ध्यान केन्द्रित किया तथा ‘Reach to Unreached’ का नवीन विचार सामने रखा। इस आधार पर प्रथमतः पत्राचार एवं उसके पश्चात सूचना एवं संचार क्रान्ति की नवीन तकनीक से युक्त दूरस्थ शिक्षा का विकासमान विचार प्रकट हुआ।

इस आधार पर यह तथ्य सामने आया कि जैसे-जैसे विश्व में जनसंख्या(मुख्यतः शिक्षित जनसंख्या) बढ़ती गई वैसे-वैसे उसकी शिक्षा(उच्च शिक्षा) एवं सूचना संबंधित माँगों में निरन्तर वृद्धि होती गई। इन माँगों ने समय, उपयोगिता एवं परिस्थितियों के अनुरूप बहुआयामी रूप ले लिया तथा परम्परागत शिक्षा प्रणाली तथा अन्य प्रणालियाँ इन माँगों को पूर्ण करने में सक्षम प्रतीत नहीं हो रही थी। **(चौरसिया, 2013, पृ060)**[1] ऐसे में एक ऐसी नवीन शिक्षा प्रणाली का उदय हुआ जो विद्यार्थी की आवश्यकतानुरूप हो, सर्वसुलभ हो, लचीली हो एवं अपेक्षाकृत कम खर्चीली हो। इस प्रणाली को दूरस्थ शिक्षा प्रणाली कहा गया। प्रोफेसर एम0जे0मुरे के अनुसार- &"Distance education is planned learning that normally occurs in a different place from teaching and as a result requires special techniques of course design , special instructional techniques, special methods of communications by electronic and other technology, as well as special organizational and administrative arrangements." **(चौरसिया, 2013, पृ050)**[2]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य उस विशिष्ट वर्ग विशेषकर कमजोर वर्ग, जो दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहता है, व्यस्कों, गृहणियों तथा नौकरीपेशा लोगों तक शिक्षा(उच्च शिक्षा) पहुँचाना है जो सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से शिक्षा(उच्च शिक्षा) से वंचित हैं या बीच में ही शिक्षा छोड़ चुके हैं। शिक्षा की यह पद्धति पेशेवर लोगों को उनके अपने ज्ञान को अद्यतन करने, नए व्यवसाय और विषयों का चुनाव करने में सक्षम बनाती है तथा साथ ही उनको आजीविका(Career) में उन्नति के लिए योग्यता बढ़ाने का अवसर भी प्रदान करती है।

विगत कुछ वर्षों से लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर तथा सूचना तकनीक के प्रयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है और इस कारण शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। विगत तीन दशकों से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली बहुत विकसित हुई है और इसका प्रमुख कारण सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं विकास रहा है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी विभिन्न साधनों जैसे मुद्रित सामग्री, दृश्य-श्रव्य सामग्री, कम्प्यूटर, रेडियो एवं टेलीविजन प्रसारण, टेलीकान्फ्रेन्सिंग, इंटरनेट, वेबसाइट आदि के माध्यम से घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर

सकता है। 'वास्तव में संपर्क-शीलता व संपर्क प्रवणता यही किसी भी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की नींव है और कुंजी भी।' **(चौरसिया, 2013, पृ060)**[3]

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि यह समयबद्ध व स्थानबद्ध नहीं है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षण एवं अध्ययन, परम्परागत शिक्षा प्रणाली की अपेक्षा अधिक छात्रानुकूल व छात्र केन्द्रित है क्योंकि इस प्रणाली में विद्यार्थी की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। परम्परागत एवं संस्थागत प्रणाली में जहाँ शिक्षण विधियों की प्रधानता होती है वही दूरस्थ शिक्षण प्रणाली में संप्रेक्षण माध्यमों जैसे रेडियो, टी0वी0, दृश्य-श्रव्य सामग्री, कम्प्यूटर, टेलीफोन, टेलीकान्फ्रेन्सिंग, इंटरनेट, मोबाइल, वेबसाइट आदि की प्रधानता होती है। इस कारण दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षा के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में अधिक प्रभावी एवं लोकप्रिय रही है तथा अन्य क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। आज विश्व के कई देशों के साथ ही भारत में भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली बहुत प्रभावी है तथा शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है।

भारतीय संगीत, मुख्यतः शास्त्रीय संगीत परम्परागत संगीत है तथा इसकी परम्परा बहुत प्राचीन है। भारतीय संगीत की परम्परागत शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं। पहली गुरू-शिष्य प्रणाली तथा दूसरी संस्थागत शिक्षण प्रणाली। भारतीय शास्त्रीय संगीत गुरूमुखी विद्या है तथा इसमें गुरू-शिष्य प्रणाली से ही शिक्षण संभव है ऐसा माना जाता रहा है, जो बहुत हद तक सही भी है। किन्तु इस प्रणाली की अपनी सीमाओं के कारण प्रत्येक इच्छुक विद्यार्थी संगीत की शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाता। 'बीसवीं सदी के प्रारंभ में संगीत स्वरलिपि, ध्वनि मुद्रण व ध्वनि संग्रह के क्रांतिकारी शोध ने भविष्य की समस्त विस्मयकारी संभावनाओं की नींव डाली और कला प्रदर्शन, कला विकास व कला शिक्षा के नए आयाम, नए मार्ग खोल दिए। संगीत अब संग्रहीत होने लगा। एक स्थल से दूसरे स्थल भेजे जाने लगा। संगीत स्वरलिपि पुस्तकों के माध्यम से, ध्वनि मुद्रिकाओं के माध्यम से अध्ययन के लिए संगीत सुदूरवर्ती स्थानों तक, सुदूर स्थित अभ्यासकों को उपलब्ध होने लगा। संगीत शिक्षा में यह एक क्रांतिकारी कदम था।' **(चौरसिया, 2013, पृ061)**[4]

संस्थागत शिक्षण प्रणाली के उदय से संगीत शिक्षा अपेक्षाकृत अधिक सुलभ हो सकी। इसका मुख्य उद्देश्य था समाज में शास्त्रीय संगीत के गुणग्राहियों में वृद्धि करना, शास्त्रीय संगीत के प्रति सामान्य जन एवं समाज में समझ पैदा करना तथा शास्त्रीय संगीत शिक्षण के दायरे को बढ़ाना। परन्तु संस्थागत शिक्षण प्रणाली की अपनी कुछ सीमाएँ हैं जिस कारण यह प्रणाली शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में अपने उद्देश्यों की पूर्ति में कुछ सीमा तक ही सफल हो पाई। ऐसे में सूचना एवं संचार तकनीक तथा संप्रेक्षण माध्यमों पर आधारित दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। 'जहाँ तक संगीत में दूरस्थ शिक्षा को प्रयोग करने का प्रश्न है, आज की सदी में संगीत की दूरस्थ शिक्षा में प्रयोग होने वाले घटकों जैसे रेडियो, टेलीविजन, कैसेट आदि वैज्ञानिक तत्वों ने कई प्रकार से प्रभावित किया है। टैक्नोलाजी के विकास से भारतीय संगीत की शिक्षा पद्धति पर काफी असर पडा है।' **(शर्मा, 2010, पृ0359)**[5]

संगीत सीखने के इच्छुक विद्यार्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार माध्यमों से सीखने का एक नवीन माध्यम प्राप्त हुआ है जो उनकी सुविधानुरूप है। 'पिछले कुछ वर्षों में आकाशवाणी के अलावा दूरदर्शन और ऑडियो कैसटों ने भी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने में काफी योगदान दिया है। जो संगीत पहले उस्तादों और फिर विद्यालयों में सिखाया जाता रहा है, उसकी शिक्षा आज संगीत के विद्यार्थी को घर बैठे प्राप्त हो सकती है। विविध भारती से 'संगीत सरिता' का पाठ प्रसारित होता है और यह कार्यक्रम संगीत श्रोताओं में बहुत लोकप्रिय व लाभप्रद है। ऐसे कार्यक्रमों को वृहद् स्तर पर ले जाया जा सकता है।" **(शर्मा, 2010, पृ0360)**[6] संजय बंदोपाध्याय के अनुसार हमारा संगीत विषयवस्तु और अभिगम की दृष्टि से इतना समृद्ध है कि आशा की जा सकती है कि दूरवर्ती शिक्षण के माध्यम से भारतीय संगीत की

उपलब्धता का विश्वव्यापी स्वागत किया जाएगा। इससे इस महान कला को विकसित करने एवं इसकी गुणवत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखने में भी सहायता मिलेगी।

'मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नई के दूरस्थ शिक्षा संस्थान, अन्नामलाई विश्वविद्यालय तमिलनाडू, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कोलकाता, कलाई कावेरी कॉलेज ऑफ फाइन आर्टस तिरूचुपल्ली, सस्त्र विश्वविद्यालय थंजावुर, तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश, केरल आदि राज्यों के विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से संगीत विषय के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।' **(UGC-DEB, 2014-15)**[7]

<u>विभिन्न संस्थानों में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से संचालित संगीत विषय के पाठ्यक्रमों का विश्लेषण</u> - हम यहां पर भारतीय शास्त्रीय संगीत की उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में बात कर रहे हैं। इससे तात्पर्य यह है कि विद्यार्थी को संगीत का प्रारम्भिक ज्ञान है। उन्हें संगीत विषय की बारीकियों से अवगत कराना है। विभिन्न संस्थानों में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से संचालित संगीत विषय के पाठ्यक्रम के अध्ययन से जो तथ्य निकले हैं उनका वर्णन किया जा रहा है। उच्च शिक्षा में मुख्यत: स्नातक, स्नातकोत्तर, एम.फिल. स्तर के पाठ्यक्रम सम्मिलित होते हैं। इन पाठ्यक्रमों की संरचना पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षण हेतु निम्न घटक होते हैं :–

1. स्वअध्ययन सामग्री (Self Learning Material)
2. संपर्क कक्षाएँ (Contact Classes)

<u>स्वअध्ययन सामग्री</u> – स्वअध्ययन सामग्री का तात्पर्य उस विशेष रूप से तैयार पाठ्य सामग्री से है जिसे विषय विशेषज्ञों द्वारा इस प्रकार तैयार किया जाता है कि जब विद्यार्थी उसे पढ़े तो उसे ऐसा प्रतीत हो कि जैसे शिक्षक उसे कक्षा में पढ़ा रहा है। संगीत विषय की स्वअध्ययन सामग्री के दो भाग होते हैं – पहला प्रयोगात्मक तथा दूसरा शास्त्र या सैद्धान्तिक।

➢ प्रयोगात्मक पक्ष के अन्तर्गत स्वरलिपि पद्धति में निबद्ध संगीत की रचनाएँ लिपिबद्ध होती हैं तथा उनको प्रस्तुत करने के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा आदर्श अध्याय (Model Lesson), ऑडियो-विडियो व्याख्यान(15 से 30 मिनट) के रूप में तैयार किए जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि गायन सं संबंधित व्याख्यान हो तो इसमें राग का परिचय, उसके आरोह, अवरोह, पकड़, चलन, वादी संवादी आदि स्वरों, विलम्बित व मध्यलय ख्याल, तान आदि के विषय में उदाहरण देकर समझाया जाता है। यह ऑडियो-विडियो व्याख्यान सी. डी. रूप में, या इंटरनेट पर संस्थान की वेबसाइट पर या यू-ट्यूब जैसी वेबसाइट पर विद्यार्थी के लिए उपलब्ध होता है। विद्यार्थी अपने समय, स्थान आदि की सुविधानुसार इसे देख व सुनकर संबंधित राग एवं इसके विभिन्न पहलुओं के विषय में जान सकता है। साथ ही विद्यार्थी यू-ट्यूब एवं इस जैसी अन्य वेबसाइट में उपलब्ध (Upload) अन्य संगीतकारों(गायक या वादक) द्वारा प्रस्तुत उसी राग को सुनकर भी उस राग की बारीकियों को समझ सकता है। विद्यार्थी टेलीकाल्फ्रेन्सिंग, स्काईप (Skype), विडियो कॉल(Video Call) आदि के माध्यम से संबंधित शिक्षक से बात कर अपने शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकता है। इन ऑडियो-विडियो व्याख्यानों में रचनाओं (बंदिशों)में प्रयुक्त शब्दों के सही उच्चारण को भी सम्मिलित किया जाता है।

सूचना प्रौद्योगिकी की ताकत को समझते हुए ही आज कई संस्थान(सरकारी, अर्द्धसरकारी आदि) विषय विशेषज्ञों से उस विषय के प्रत्येक पहलु पर ऑडियो-विडियो व्याख्यान तैयार करवा रहे हैं। इनमें से कुछ निशुल्क उपलब्ध है तथा कुछ के लिए शुल्क देना पडता है।

➢ शास्त्र या सैद्धान्तिक पक्ष(Theory) के अन्तर्गत, लिखित (Printed) अध्याय होते हैं तथा इन्हीं अध्यायों के भी ऑडियो-विडियो व्याख्यान विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए जाते हैं।

भारतीय संगीत का प्रयोगात्मक पक्ष हो या सैद्धान्तिक पक्ष लेकिन दूरस्थ शिक्षण प्रणाली में प्रत्येक दशा में विद्यार्थी को ही आत्म-अनुशासित एवं आत्मनिर्देशित होना आवश्यक है। जिससे वह ज्ञान का अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

संपर्क कक्षाएँ - दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (Personal Contact Programme) भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत कार्यशाला (Workshop), विशेष परामर्श सत्र (Special Counselling Session) का आयोजन किया जाता है। इसमें विद्यार्थी को विषय विशेषज्ञ से सीधे संवाद का अवसर मिलता है। इस प्रकार के कार्यक्रम से विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित प्रश्नों, समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता है। विद्यार्थी इन कार्यक्रमों को रिकॉर्ड कर सकता है और सुविधानुसार बाद में भी इनसे सीख सकता है।

मूल्यांकन - मूल्यांकन के लिए परीक्षा, सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। परीक्षा से यह मूल्यांकन किया जाता है कि विद्यार्थी कितना सीख पाया है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थी का समय-समय पर विभिन्न माध्यमों(जैसे सत्रीयकार्य, सैद्धान्तिक परीक्षा, प्रयोगात्मक परीक्षा, मौखिक परीक्षा आदि) से मूल्यांकन भी किया जाता है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत परीक्षा दो भागों में विभाजित है–सत्रीयकार्य(Assignment) व मुख्य परीक्षा(सैद्धान्तिक परीक्षा व प्रयोगात्मक परीक्षा या मौखिक परीक्षा)। सत्रीय कार्य गृह कार्य जैसा ही है। इसमें विद्यार्थी को पाठ्यक्रम को भली-भांति पढ़ कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देने होते हैं। सैद्धान्तिक परीक्षा विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षण संस्थान द्वारा स्थापित नजदीकी परीक्षा केन्द्र में देता है। प्रयोगात्मक परीक्षा या मौखिक परीक्षा दूरस्थ शिक्षण संस्थान के हेडक्वार्टर में या संस्थान द्वारा स्थापित परीक्षा केन्द्र में आयोजित की जाती है। प्रयोगात्मक परीक्षा या मौखिक परीक्षा की रिकार्डिंग भी की जाती है जिससे विद्यार्थी का सही मूल्यांकन किया जा सके।

इन सब से इतर दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की लचीली व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यार्थी को किसी पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए अन्य शिक्षण प्रणाली की अपेक्षा अधिक समय मिलता है।

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लाभ :-

- भौगोलिक रूप से दूर रहने वाले इच्छुक विद्यार्थी भी संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकने में सक्षम होंगे, जो नियमित रूप से शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करने में असक्षम हैं।
- इच्छुक विद्यार्थी अपने समय, स्थान व सुविधानुसार संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
- इच्छुक विद्यार्थी रोजगार के साथ-साथ संगीत की शिक्षा को भी आगे बढ़ा सकते हैं।
- सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों एवं संचार माध्यमों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, वेबसाइट आदि) की सहायता से इच्छुक विद्यार्थी शिक्षक से दूर रहते हुए भी उससे जुड़ा रह सकता है और अपने संगीत के ज्ञान में वृद्धि कर सकता है।

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की उच्च शिक्षा ग्रहण करने में निम्न समस्याएँ रेखांकित की जा सकती हैं:-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं एवं जटिलताओं को विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से किस प्रकार सीखाया जाए।
- दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत बनाए गए पाठ्यक्रम में से विद्यार्थी कितना सीख पाया है, उसका निर्धारण किस प्रकार किया जा सकता है।
- दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक सूचना प्रौद्योगिकी (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, टेलीकान्फ्रेन्सिंग आदि) संबंधी कौशल में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को किस प्रकार दक्ष बनाया जाए।
- विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों जब चाहे तब कैसे संपर्क साध सकें और संगीत का अध्ययन-अध्यापन बिना किसी रूकावट के कैस संभव हो सके।

दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की उच्च शिक्षा ग्रहण करने में उत्पन्न समस्याओं के संभावित समाधान :-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत अनेक सूक्ष्मताओं एवं जटिलताओं को लिए हुए है। इन सूक्ष्मताओं एवं जटिलताओं का सीखाने के लिए गुरू-शिष्य परम्परा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। प्राचीन काल में संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग था । किन्तु समय के साथ-साथ अनेक कारणों से संगीत कुछ वर्ग विशेष की धरोहर बनकर रह गया । गुरू अपेक्षाकृत कम हो गए जिस कारण प्रत्येक इच्छुक विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता था। संगीत की शिक्षा सर्वसुलभ बनाने हेतु इसकी शिक्षा संस्थागत शिक्षण प्रणाली के माध्यम से दी जाने लगी। संस्थागत शिक्षण प्रणाली की अपनी कुछ सीमाओं के कारण संगीत शिक्षा का अपेक्षाकृत कम प्रचार हो पाया।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रान्ति की नवीन तकनीक से युक्त दूरस्थ शिक्षण प्रणाली ने संगीत की गुरू-शिष्य परम्परा एवं संस्थागत शिक्षण प्रणाली की सीमाओं को तोडते हुए इच्छुक विद्यार्थियों के लिए संगीत शिक्षा प्राप्त करने के नए रास्ते खोल दिए। और यह प्रणाली बहुत हद तक इसमें सफल भी हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रान्ति की नवीन तकनीक(जैसे रेडियो एवं टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, टेलीकान्फ्रेन्सिंग, दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि) से युक्त दूरस्थ शिक्षण प्रणाली विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य सीधा संवाद स्थापित करती है। इसका स्वरूप परम्परागत शिक्षण प्रणाली के कक्षा के स्वरूप जैसा ही होता, जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत अनेक सूक्ष्मताओं एवं जटिलताओं को समझाया जा सकता है।

➢ विद्यार्थी कितना सीख पाया है उसका निर्धारण दूरस्थ शिक्षण प्रणाली में अन्य प्रणालियों की अपेक्षा भिन्न होता है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थी का समय-समय पर विभिन्न माध्यमों(जैसे सत्रीयकार्य, सैद्धान्तिक परीक्षा, प्रयोगात्मक परीक्षा, मौखिक परीक्षा आदि) से मूल्यांकन किया जा सकता है। साथ ही विद्यार्थी से निश्चित समयांतराल पर इकाई के क्रमानुसार सीखी हुई चीजों जैसे राग, ताल, बंदिश आदि की सीडी मंगवाई जा सकती है या उससे संबंधित संस्थान की वेबसाईट पर उपलब्ध कराने को कहा जा सकता है। इसके साथ ही व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (Personal Contact Programme), कार्यशाला (Workshop), विशेष परामर्श सत्र (Special Counselling Session) एवं प्रयोगात्मक परीक्षा व मौखिक परीक्षा में भी विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जा सकता है कि वह कितना सीख पाया है।

➢ दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं द्वारा विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को सूचना प्रौद्योगिकी (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, टेलीकान्फ्रेन्सिंग आदि) संबंधी कौशल में दक्ष बनाने हेतु समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

➢ सरकार, दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य संबंधित संस्थाओं को आपस में सामंजस्य स्थापित कर सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों एवं संचार माध्यमों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, टेलीकान्फ्रेन्सिंग, रेडियो, टेलीविजन आदि) का एक ऐसा जाल फैलाना होगा जिससे विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों जब चाहे तब संपर्क साध सकें और संगीत का अध्ययन-अध्यापन बिना किसी रूकावट के कर सके।

निष्कर्ष - भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा बहुत प्राचीन है तथा संगीत शिक्षण गुरू-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत होता रहा है। किन्तु भारतीय शास्त्रीय संगीत एक वर्ग विशेष की धरोहर के रूप मे पोषित एवं विकसित होता रहा। जिस कारण न तो यह जन साधारण में लोकप्रिय हो पाया और न ही इसका क्षेत्र विस्तार हो पाया। संस्थागत शिक्षण प्रणाली के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विस्तार आया तथा जन साधारण पर भी इसका प्रभाव पड़ा, किन्तु संस्थागत शिक्षण प्रणाली की अपनी कुछ सीमाओं जैसे समय, स्थान, आयु, वर्ग, जाति, योग्यता, धर्म आदि के कारण यह अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी सिद्ध नहीं हो पाई।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा सूचना एवं संचार तकनीक के अत्याधुनिक माध्यमों के अत्यधिक विकास एवं प्रयोग से सभी क्षेत्रों के साथ-साथ संगीत के शिक्षण में भी नवीन क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है। आज संगीत की शिक्षा जन साधारण को उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न प्रकार की नवीन तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है। इस कार्य हेतु दूरस्थ शिक्षण प्रणाली उपयुक्त प्रतीत हो रही है क्योंकि इसने समय, स्थान, आयु आदि के बन्धनों से मुक्ति दिलाने का सफल प्रयास किया है। विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाइल, स्काईप, टेलीकान्फ्रेन्सिंग आदि) संबंधी कौशल में दक्ष होकर समय, स्थान आदि के बन्धनों से मुक्त होते हुए अपने मध्य सीधा संवाद स्थापित कर सकते हैं तथा परम्परागत शिक्षण प्रणाली के समदृश्य कक्षा का स्वरूप भी स्थापित कर सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग की माँग है तथा इससे कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह सकता।

सन्दर्भ सूची

[1] चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0 60।
[2] चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0 50।
[3] चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0 60।
[4] चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0 61।

[5] शर्मा, स्वतन्त्र, 2010, सौन्दर्य, रस और संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, पृ0 359।
[6] शर्मा, स्वतन्त्र, 2010, सौन्दर्य, रस और संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, पृ0 360।
[7] University Grant Commission, Distancde Education Bureau, Retrieved from http://www.ugc.ac.in/deb/pdf/Final_list_for_website_2014-15.pdf

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
[2] शर्मा, स्वतन्त्र, 2010, सौन्दर्य, रस और संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
[3] शर्मा, महारानी, 2011, संगीत मणि(भाग 2), श्री भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद।
[4] Goel, Aruna and Goel, S.L., 2009, Distance Education: Principles, Potentialities
[5] and Perspective, Deep & Deep Publications Pvt. Ltd., New Delhi.
[6] Sharma, B.M., ed., 2009, Distance Education, Commonwealth Publishers, Delhi.
[7] Sharma, Madhulika, 2009, Distance Education:Concepts and Principles, Kanishka
[8] Publishers, Distributors, New Delhi.
[9] Harichandan, Dhaneshwar, ed., 2009, Open And Distance Learning: Exploring
[10] New Frontiers & Developments, Himalaya Publishing House Pvt. Ltd., Mumbai.
[11] www.mhrd.gov.in
[12] www.ugc.ac.in
[13] www.ignou.ac.in
[14] www.uou.ac.in
[15] www.col.org
[16] www.ideunom.ac.in
[17] www.kalaikaviri-dep.com
[18] www.sastra.edu

*Corresponding author.
E-mail address: dwijeshu@yahoo.in